भारत के संदर्भ में नियोजन और सततपोषणीय विकास

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» नियोजन: अर्थ और प्रक्रिया

प्रश्न 1 (आसान). नियोजन का सबसे पहला चरण क्या होता है?
उत्तर – लक्ष्य या उद्देश्य तय करना।

प्रश्न 2 (आसान). परीक्षा की तैयारी के लिए 'नियोजन' में तुम क्या-क्या करोगे?
उत्तर – विषय और समय बांटना, नोट्स बनाना, रिवीजन का प्लान।

प्रश्न 3 (मध्यम). भारत में 'आर्थिक विकास' के लिए नियोजन क्यों ज़रूरी है? एक कारण बताओ।
उत्तर – सीमित संसाधनों का बेहतर उपयोग करके ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक विकास का लाभ पहुँचाने के लिए।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर कोई नियोजन ठीक से लागू न हो पाए, तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं?
उत्तर – संसाधनों की बर्बादी, लक्ष्य पूरे न होना, समय और पैसे का नुकसान, जनता में असंतोष।

» नियोजन के उपागम: खंडीय और प्रादेशिक नियोजन

प्रश्न 5 (आसान). अगर सरकार पूरे देश में 'उद्योगों' के विकास के लिए योजना बनाए, तो वह कौन सा नियोजन कहलाएगा?
उत्तर – खंडीय नियोजन

प्रश्न 6 (आसान). अगर सरकार किसी 'सूखाग्रस्त' इलाके में पानी की कमी दूर करने के लिए खास योजना बनाए, तो वह कौन सा नियोजन है?
उत्तर – प्रादेशिक नियोजन

प्रश्न 7 (मध्यम). भारत में 'संचार' (communication) सुविधाओं का विकास और 'जनजातीय क्षेत्रों' में विकास – इन दोनों में से कौन सा 'खंडीय' है और कौन सा 'प्रादेशिक'?
उत्तर – संचार सुविधाओं का विकास 'खंडीय नियोजन' है, और जनजातीय क्षेत्रों में विकास 'प्रादेशिक नियोजन' है।

प्रश्न 8 (कठिन). एक ऐसी योजना का उदाहरण दो जहाँ 'खंडीय' और 'प्रादेशिक' नियोजन दोनों का इस्तेमाल हुआ हो।
उत्तर – जैसे 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' (खंडीय - स्वास्थ्य सेक्टर के लिए) जो 'दूरदराज के ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों' (प्रादेशिक - विशिष्ट क्षेत्र) में स्वास्थ्य सेवाएँ बेहतर बनाने पर विशेष ज़ोर देता है।

» योजना आयोग से नीति आयोग तक

प्रश्न 9 (आसान). योजना आयोग की स्थापना कब हुई थी?
उत्तर – 1950 में

प्रश्न 10 (आसान). नीति आयोग का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – नेशनल इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (National Institution for Transforming India)

प्रश्न 11 (मध्यम). नीति आयोग योजना आयोग से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर – योजना आयोग योजनाएँ बनाता था, जबकि नीति आयोग सरकारों को नीतिगत और तकनीकी सलाह देता है। नीति आयोग सहकारी संघवाद पर अधिक ज़ोर देता है।

प्रश्न 12 (कठिन). भारत में योजना आयोग को नीति आयोग से बदलने का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – इसका मुख्य उद्देश्य देश के आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना, उन्हें अधिक शक्ति देना और एक 'बॉटम-अप' दृष्टिकोण (नीचे से ऊपर की ओर) अपनाना था, ताकि योजनाएं ज़मीनी हकीकत के ज़्यादा करीब हों।

» लक्ष्य क्षेत्र नियोजन और लक्ष्य समूह उपागम

प्रश्न 13 (आसान). लक्ष्य क्षेत्र नियोजन का एक उदाहरण बताओ।
उत्तर – सूखाग्रस्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम।

प्रश्न 14 (आसान). लक्ष्य समूह उपागम का एक उदाहरण दो।
उत्तर – लघु कृषक विकास संस्था (SFDA)।

प्रश्न 15 (मध्यम). लक्ष्य क्षेत्र नियोजन और लक्ष्य समूह उपागम में क्या अंतर है?
उत्तर – लक्ष्य क्षेत्र नियोजन भौगोलिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों पर केंद्रित होता है (जैसे पहाड़ी या सूखाग्रस्त क्षेत्र), जबकि लक्ष्य समूह उपागम समाज के विशेष कमजोर वर्गों (जैसे छोटे किसान, जनजाति) पर केंद्रित होता है।

प्रश्न 16 (कठिन). पहाड़ी क्षेत्रों के विकास के लिए राष्ट्रीय समिति ने क्या सुझाव दिए थे?
उत्तर – समिति ने सुझाव दिया था कि सभी लोग लाभान्वित हों, स्थानीय संसाधनों और प्रतिभाओं का विकास हो, जीविका निर्वाह अर्थव्यवस्था को निवेश-उन्मुखी बनाया जाए, पिछड़े क्षेत्रों का व्यापार में शोषण न हो, बाजार व्यवस्था में सुधार हो, और पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखा जाए।

» सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम

प्रश्न 17 (आसान). सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में शुरू हुआ?
उत्तर – चौथी पंचवर्षीय योजना

प्रश्न 18 (आसान). इस कार्यक्रम के दो मुख्य उद्देश्य क्या हैं?
उत्तर – लोगों को रोज़गार देना और सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए उत्पादन के साधन विकसित करना।

प्रश्न 19 (मध्यम). पांचवीं पंचवर्षीय योजना में इस कार्यक्रम के कार्यक्षेत्र में क्या बदलाव आए?
उत्तर – शुरुआत में इसमें अधिक श्रमिकों वाले सिविल निर्माण कार्यों पर ज़ोर था, बाद में सिंचाई परियोजनाओं, भूमि विकास, वनीकरण, चरागाह विकास, और ग्रामीण अवसंरचना जैसे बिजली, सड़क, बाज़ार और ऋण सुविधाओं पर भी ध्यान दिया गया।

प्रश्न 20 (कठिन). सूखा संभावी क्षेत्रों के विकास की रणनीति में पारिस्थितिकीय संतुलन को कैसे महत्व दिया गया है?
उत्तर – इसमें जल, मिट्टी, पौधों, मानव तथा पशु जनसंख्या के बीच पारिस्थितिकीय संतुलन को बहाल करने पर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि पर्यावरणीय निम्नीकरण रोका जा सके।

» पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम

प्रश्न 21 (आसान). पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में शुरू हुआ था?
उत्तर – पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में।

प्रश्न 22 (आसान). राष्ट्रीय समिति ने किन पहाड़ी क्षेत्रों को पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों में शामिल करने की सिफारिश की थी?
उत्तर – जिनकी ऊँचाई 600 मीटर से अधिक है और जहाँ जनजातीय उप-योजना लागू नहीं है।

प्रश्न 23 (मध्यम). पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के दो मुख्य उद्देश्यों को संक्षेप में बताइए।
उत्तर – पहला, विकास का लाभ सभी लोगों तक पहुँचे, न कि केवल कुछ प्रभावशाली लोगों तक। दूसरा, स्थानीय संसाधनों और प्रतिभाओं का विकास हो, जिससे वहाँ के लोगों को रोज़गार मिल सके।

प्रश्न 24 (कठिन). पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के लिए बनी राष्ट्रीय समिति ने 'पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने' पर क्यों ज़ोर दिया?
उत्तर – क्योंकि पहाड़ी क्षेत्रों का पर्यावरण बहुत संवेदनशील होता है। विकास के नाम पर अगर पेड़ों को काटा जाए या प्रदूषण बढ़ाया जाए, तो भूस्खलन, बाढ़ और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए, विकास ऐसा होना चाहिए जो प्रकृति को नुकसान न पहुँचाए और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी संसाधन बचाए रखे।

» भरमौर क्षेत्र में समन्वित जनजातीय विकास कार्यक्रम (केस स्टडी)

प्रश्न 25 (आसान). भरमौर क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के किस जिले में स्थित है?
उत्तर – चंबा जिले में।

प्रश्न 26 (आसान). भरमौर में कौन सा जनजातीय समुदाय निवास करता है?
उत्तर – गद्दी समुदाय।

प्रश्न 27 (मध्यम). ITDP का मुख्य उद्देश्य भरमौर क्षेत्र के लिए क्या था?
उत्तर – गद्दी लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना और भरमौर व हिमाचल प्रदेश के अन्य भागों के बीच विकास के अंतर को कम करना।

प्रश्न 28 (कठिन). भरमौर क्षेत्र में समन्वित जनजातीय विकास उपयोजना के किन्हीं तीन अवसंरचना विकास संबंधी योगदानों को बताइए।
उत्तर – इस योजना के महत्वपूर्ण योगदान थे: विद्यालयों का विकास, जन स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार, और पेयजल, सड़कों, संचार व विद्युत जैसी बुनियादी सुविधाओं का विकास।

» सतत पोषणीय विकास की अवधारणा

प्रश्न 29 (आसान). क्या सिर्फ आर्थिक विकास 'सतत पोषणीय विकास' है? हाँ या नहीं?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 30 (आसान). अगर हम सारे जंगल काट दें ताकि ज़्यादा ज़मीन खेती के लिए मिले, तो क्या यह सतत पोषणीय विकास होगा?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 31 (मध्यम). तुम अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी में 'सतत पोषणीय विकास' के लिए क्या कर सकते हो? कोई एक उदाहरण दो।
उत्तर – पानी बचाना, बिजली बचाना, कूड़ा कम करना, पेड़ लगाना।

प्रश्न 32 (कठिन). एक शहर में नए कारखाने लग रहे हैं जिससे लोगों को रोज़गार मिल रहा है, लेकिन हवा प्रदूषित हो रही है। क्या यह सतत पोषणीय विकास है? समझाओ।
उत्तर – नहीं, क्योंकि भले ही रोज़गार मिल रहा है (आर्थिक विकास), लेकिन प्रदूषण से लोगों का स्वास्थ्य खराब होगा और पर्यावरण को नुकसान होगा, जो सतत पोषणीय विकास के खिलाफ है।

» इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र (केस स्टडी)

प्रश्न 33 (आसान). इंदिरा गांधी नहर का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराना।

प्रश्न 34 (आसान). नहर से पहले उस क्षेत्र की मुख्य समस्या क्या थी?
उत्तर – पानी की कमी और मरुस्थलीकरण।

प्रश्न 35 (मध्यम). इंदिरा गांधी नहर के दो सकारात्मक प्रभाव बताइए।
उत्तर – कृषि का विकास और लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ना।

प्रश्न 36 (कठिन). इंदिरा गांधी नहर परियोजना के दो प्रमुख नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों की व्याख्या कीजिए।
उत्तर – अधिक सिंचाई के कारण जलभराव (waterlogging) और मृदा लवणता (soil salinity) में वृद्धि हुई, जिससे ज़मीन की उर्वरता प्रभावित हुई।

» इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने वाले उपाय

प्रश्न 37 (आसान). इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में किस प्रकार की फसलों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए?
उत्तर – जल सघन फसलें (जिनमें ज़्यादा पानी लगता है)

प्रश्न 38 (आसान). कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत नालों को पक्का करना क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – पानी के बहाव में होने वाली क्षति को कम करने के लिए।

प्रश्न 39 (मध्यम). सतत पोषणीय विकास के लिए इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में वनीकरण क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – वनीकरण से मिट्टी का कटाव रुकता है, पर्यावरण में नमी बढ़ती है, और पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है, खासकर चरण-2 के भंगुर पर्यावरण में।

प्रश्न 40 (कठिन). इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में आर्थिक विविधीकरण का क्या अर्थ है और यह सतत पोषणीय विकास में कैसे मदद करेगा?
उत्तर – आर्थिक विविधीकरण का अर्थ है कि सिर्फ कृषि और पशुपालन पर निर्भर न रहना, बल्कि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों (जैसे उद्योग, व्यापार, सेवाएँ) को भी विकसित करना। इससे लोगों को अलग-अलग काम मिलेंगे, आय के स्रोत बढ़ेंगे, और क्षेत्र की आर्थिक स्थिरता बढ़ेगी, जिससे विकास ज़्यादा टिकाऊ होगा और कृषि पर दबाव कम होगा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए, सरकार को किसी ग्रामीण इलाके में सड़क बनानी है, तो इसमें 'नियोजन' कैसे किया जाएगा?

› पहला कदम: लक्ष्य तय करना - 'गाँव को बाज़ार से जोड़ने वाली सड़क बनाना।'

› दूसरा कदम: जानकारी इकट्ठा करना - 'देखना कि सड़क कहाँ से जाएगी, कितनी लंबी होगी, कितनी चौड़ी होगी, रास्ते में क्या-क्या आएगा (खेत, नदी)।'

› तीसरा कदम: संसाधन देखना - 'कितने पैसे चाहिए, कितना मटीरियल लगेगा (ईंट, पत्थर, सीमेंट), कितने मजदूर लगेंगे।'

› चौथा कदम: योजना बनाना - 'नक्शा बनाना, काम को हिस्सों में बाँटना (पहले मिट्टी डालना, फिर पत्थर, फिर डामर), समय सीमा तय करना।'

› पांचवां कदम: काम शुरू करना और निगरानी करना - 'काम को लागू करना और यह देखना कि सब योजना के अनुसार हो रहा है या नहीं, कोई दिक्कत तो नहीं आ रही।'

उत्तर – इस तरह, सोच-समझकर हर कदम उठाने से ही सड़क बनाने का लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा हो पाएगा। यही नियोजन की पूरी प्रक्रिया है।

उदाहरण 2. भारत में 'कृषि' और 'पहाड़ी क्षेत्रों के विकास' के लिए बनी योजनाओं को आप नियोजन के किस उपागम के अंतर्गत रखेंगे और क्यों?

› पहला, 'कृषि' क्या है? कृषि एक सेक्टर है, यानी अर्थव्यवस्था का एक खंड। तो, जब हम पूरे देश में कृषि के विकास की बात करेंगे, जैसे कि अच्छी खाद, बीज, या सिंचाई के लिए योजना बनाना, तो यह 'खंडीय नियोजन' होगा।

› दूसरा, 'पहाड़ी क्षेत्र' क्या हैं? ये एक खास भौगोलिक क्षेत्र हैं, एक 'प्रदेश'। इनकी अपनी खास समस्याएँ होती हैं, जैसे दुर्गम रास्ते, कम सुविधाएँ। तो, जब हम इन खास 'क्षेत्रों' की समस्याओं को ध्यान में रखकर योजना बनाते हैं, तो यह 'प्रादेशिक नियोजन' कहलाएगा।

› तीसरा, हमें यह भी समझना होगा कि 'खंडीय' और 'प्रादेशिक' नियोजन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हम शिक्षा के खंड का विकास करते हैं, लेकिन अगर किसी पहाड़ी क्षेत्र में शिक्षा की ज़्यादा ज़रूरत है, तो वहाँ प्रादेशिक नियोजन के तहत शिक्षा पर

ज़्यादा ज़ोर दिया जा सकता है।

उत्तर – कृषि के लिए योजनाएँ 'खंडीय नियोजन' के अंतर्गत आएंगी क्योंकि कृषि अर्थव्यवस्था का एक खंड (सेक्टर) है। पहाड़ी क्षेत्रों के विकास के लिए योजनाएँ 'प्रादेशिक नियोजन' के अंतर्गत आएंगी क्योंकि ये विशिष्ट भौगोलिक 'क्षेत्रों' की ज़रूरतों पर केंद्रित होती हैं।

उदाहरण 3. योजना आयोग और नीति आयोग के मुख्य अंतरों को स्पष्ट करें।

› सबसे पहले हम योजना आयोग के बारे में देखेंगे। इसकी स्थापना 1950 में हुई थी।

› योजना आयोग का मुख्य काम पंचवर्षीय योजनाएँ (Five Year Plans) बनाना और लागू करना था। यह राज्यों के लिए भी नीतियां बनाता था।

› अब आते हैं नीति आयोग पर। इसकी स्थापना 1 जनवरी 2015 को योजना आयोग की जगह हुई।

› नीति आयोग का मुख्य कार्य केंद्र और राज्य सरकारों को रणनीतिक और तकनीकी सलाह देना है। यह खुद योजनाएँ नहीं बनाता, बल्कि उन्हें बनाने में मदद करता है।

› एक और बड़ा अंतर यह है कि नीति आयोग 'सहकारी संघवाद' (cooperative federalism) के सिद्धांत पर काम करता है, मतलब इसमें राज्यों की भागीदारी और आवाज़ को ज़्यादा महत्व दिया जाता है। यह एक 'थिंक टैंक' (think tank) की तरह काम करता है।

उत्तर – योजना आयोग योजना निर्माण और आवंटन का काम करता था, जबकि नीति आयोग मुख्य रूप से केंद्र व राज्यों को नीतिगत और तकनीकी सलाह देने वाला एक थिंक टैंक है, जिसमें राज्यों की भागीदारी अधिक होती है।

उदाहरण 4. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में शुरू हुआ और इसका मुख्य उद्देश्य क्या था?

› यह कार्यक्रम पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में शुरू किया गया था।

› इसका मुख्य उद्देश्य पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना और उन क्षेत्रों का सर्वांगीण विकास करना था।

› इसमें विशेष रूप से कृषि, बागवानी, पशुपालन और पर्यटन जैसे क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया, ताकि स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके विकास हो सके।

उत्तर – पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में शुरू हुआ था, जिसका मुख्य उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्रों के लोगों के जीवन स्तर को सुधारना और वहाँ का सर्वांगीण विकास करना था।

उदाहरण 5. एक सूखाग्रस्त गाँव में, 'सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम' के तहत कौन-कौन से काम किए जा सकते हैं जिससे लोगों को लाभ हो और सूखे का असर भी कम हो?

› सबसे पहले, गाँव के लोगों को पानी की कमी दूर करने के लिए छोटे बांध या चेक डैम बनाने के काम में लगाया जा सकता है, जिससे उन्हें रोज़गार मिलेगा।

› दूसरा, बंजर पड़ी ज़मीन पर पेड़ लगाने का अभियान चला सकते हैं, जिससे मिट्टी का कटाव रुकेगा और पर्यावरण में नमी बनी रहेगी। यह भी रोज़गार देगा।

› तीसरा, खेतों में ऐसी फसलें उगाने के लिए किसानों को ट्रेनिंग और बीज दे सकते हैं जिन्हें कम पानी की ज़रूरत हो, जैसे बाजरा या ज्वार।

› चौथा, पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था करने के लिए चरागाहों का विकास कर सकते हैं, जिससे पशुपालकों को फायदा होगा और उन्हें बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

› पांचवां, बिजली और सड़क जैसी आधारभूत सुविधाओं पर भी काम किया जा सकता है, जिससे गाँव का समग्र विकास हो।

उत्तर – इस कार्यक्रम के तहत, जल संरक्षण, वनीकरण, वैकल्पिक खेती को बढ़ावा देना, चरागाह विकास और ग्रामीण आधारभूत संरचना का निर्माण करके लोगों को रोज़गार मिलता है और सूखे का प्रभाव कम होता है।

उदाहरण 6. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य क्या थे?

› सबसे पहले, इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य था कि विकास का लाभ किसी एक वर्ग को नहीं, बल्कि सभी लोगों को मिले।

› दूसरा, पहाड़ी क्षेत्रों में जो स्थानीय संसाधन हैं, जैसे जड़ी-बूटियाँ या हस्तकला, उनका सही से विकास हो ताकि लोगों को रोज़गार मिले।

› तीसरा, वहाँ की परंपरागत खेती या जीवन-निर्वाह अर्थव्यवस्था को थोड़ा आधुनिक बनाया जाए ताकि किसान ज़्यादा पैदावार कर सकें और उनकी आय बढ़े।

› चौथा, यह सुनिश्चित करना कि पहाड़ी क्षेत्रों का शोषण न हो, खासकर व्यापार में, और उन्हें उनकी मेहनत का सही दाम मिले।

› पाँचवाँ, बाज़ार व्यवस्था को बेहतर बनाना ताकि पहाड़ी इलाकों के मज़दूरों और किसानों को सीधा फायदा हो।

› और सबसे महत्वपूर्ण, पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना, क्योंकि पहाड़ों का नाजुक पर्यावरण ही उनकी जान है।

› इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ही विकास की योजनाएँ बनाई जाती थीं, जो हर क्षेत्र की अपनी खास ज़रूरतों के हिसाब से होती थीं।

उत्तर – इस कार्यक्रम का उद्देश्य सभी लोगों को लाभ पहुँचाना, स्थानीय संसाधनों का विकास करना, जीविका निर्वाह अर्थव्यवस्था को निवेश-उन्मुखी बनाना, शोषण रोकना, बाज़ार सुधारना, और पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखना था।

उदाहरण 7. भरमौर क्षेत्र में ITDP के अंतर्गत किन क्षेत्रों को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई और इसके दो प्रमुख सामाजिक लाभ क्या थे?

› पहला कदम: हमें याद करना होगा कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य क्या था - गद्दी लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना और भरमौर व हिमाचल के बाकी हिस्सों के बीच विकास का अंतर कम करना।

› दूसरा कदम: इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए परिवहन, संचार, कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियों को सबसे ऊपर रखा गया था। साथ ही, सामाजिक और सामुदायिक सेवाओं के विकास पर भी बहुत ध्यान दिया गया।

› तीसरा कदम: सामाजिक लाभों में सबसे महत्वपूर्ण था शिक्षा का बढ़ना। स्त्री साक्षरता दर 1971 में सिर्फ 1.88% थी, जो 2011 में बढ़कर 65% हो गई।

› चौथा कदम: दूसरा बड़ा सामाजिक लाभ था लिंग अनुपात में सुधार और बाल-विवाह में कमी आना।

उत्तर – ITDP के अंतर्गत परिवहन व संचार, कृषि व संबंधित क्रियाओं, और सामाजिक व सामुदायिक सेवाओं को सर्वाधिक प्राथमिकता मिली। इसके दो प्रमुख सामाजिक लाभ साक्षरता दर में वृद्धि (विशेषकर महिलाओं में) और बाल-विवाह में कमी थे।

उदाहरण 8. एक गाँव में बिजली बनाने के लिए नदी पर बांध बनाने की योजना है। इस योजना को 'सतत पोषणीय विकास' के नज़रिए से कैसे देखा जाएगा?

› पहला कदम: क्या बांध बनाने से गाँव वालों की बिजली की ज़रूरत पूरी हो रही है? (आज की ज़रूरत)

› दूसरा कदम: क्या इससे नदी का पानी भविष्य में कम हो जाएगा या प्रदूषित होगा, जिससे आने वाली पीढ़ियों को दिक्कत होगी? (भविष्य के संसाधन)

› तीसरा कदम: क्या इस बांध से सिर्फ कुछ लोगों को फायदा मिलेगा, या सभी गाँव वालों को, खासकर गरीबों को भी? (कल्याण और समानता)

› चौथा कदम: क्या इस प्रोजेक्ट से आसपास के जंगल या जीव-जंतुओं को नुकसान होगा? (पर्यावरण सुरक्षा)

› तो, अगर यह योजना इन सभी बातों का ध्यान रखती है - यानी बिजली भी बने, पानी भी सुरक्षित रहे, सबको फायदा हो, और पर्यावरण भी न बिगड़े - तभी इसे 'सतत पोषणीय विकास' कहा जाएगा।

उत्तर – सतत पोषणीय विकास के लिए, योजना को आज की ज़रूरतों और भविष्य की सुरक्षा, सामाजिक समानता और पर्यावरण संतुलन, इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखना होगा।

उदाहरण 9. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र के संदर्भ में, यह बताइए कि कैसे एक बड़ी सिंचाई परियोजना एक शुष्क क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और समाज को बदल सकती है, साथ ही इसके पर्यावरणीय प्रभाव क्या हो सकते हैं?

› पहले नहर की संकल्पना और इसके पीछे का उद्देश्य समझें: राजस्थान के शुष्क थार रेगिस्तान को सिंचित करना।

› सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करें: कृषि का विकास, फसलों की पैदावार में वृद्धि (गेहूं, कपास), पशुधन विकास, रोजगार के अवसर, लोगों के जीवन स्तर में सुधार।

› नकारात्मक प्रभावों पर ध्यान दें: अधिक सिंचाई के कारण जलभराव (waterlogging) और मृदा लवणता (soil salinity) की समस्या।

› यह भी देखें कि इससे स्थानीय पारिस्थितिकी पर क्या असर पड़ा: प्राकृतिक वनस्पति और जीव-जंतुओं पर प्रभाव, कुछ स्थानों पर मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया में बदलाव।

› अंत में, इस केस स्टडी से सतत पोषणीय विकास की चुनौती को जोड़ें: विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना कितना मुश्किल हो सकता है।

उत्तर – इंदिरा गांधी नहर ने थार रेगिस्तान को हरा-भरा कर दिया, कृषि और रोजगार बढ़ाए। पर इसके साथ ही जलभराव और मृदा लवणता जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ भी पैदा हुईं, जो सतत पोषणीय विकास की ज़रूरत को बताती हैं।

उदाहरण 10. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में जल प्रबंधन नीति के कठोरता से कार्यान्वयन का क्या महत्व है?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि इंदिरा गांधी नहर का पानी एक अनमोल संसाधन है, खासकर रेगिस्तानी क्षेत्र में।

› अगर हम पानी का सही से प्रबंधन नहीं करेंगे, यानी उसे ऐसे ही बहने देंगे या बहुत ज़्यादा इस्तेमाल करेंगे, तो पानी की कमी हो सकती है।

› कठोर जल प्रबंधन नीति का मतलब है कि पानी को बर्बाद होने से रोकना, जैसे नहरों को पक्का करना ताकि पानी रिसे नहीं।

› साथ ही, किसानों को यह समझाना कि वे उतनी ही सिंचाई करें जितनी फसल को ज़रूरी है, और पुरानी 'वारबंदी' (यानी पानी के बाँटने की व्यवस्था) को अच्छे से लागू करना।

› इस तरह, पानी की बर्बादी रुकेगी, जलभराव और ज़मीन में नमक बढ़ने जैसी समस्याएँ कम होंगी, और भविष्य के लिए पानी बचा रहेगा।

उत्तर – जल प्रबंधन नीति के कठोरता से कार्यान्वयन से पानी की बर्बादी रुकती है, जलभराव और लवणता जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ कम होती हैं, और यह क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे 'नियोजन का अर्थ और प्रक्रिया' के रूप में 2 या 3 अंक के प्रश्न में आ सकती है। इसके हर चरण को अच्छे से समझ लेना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर खंडीय और प्रादेशिक नियोजन में अंतर या दोनों के उदाहरण पूछे जाते हैं, तो इन्हें अच्छे से समझना और याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। योजना आयोग और नीति आयोग के बीच के अंतरों और नीति आयोग के उद्देश्यों को अच्छे से समझ कर लिखो, यह सीधे प्रश्न के रूप में आता है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'लक्ष्य क्षेत्र' और 'लक्ष्य समूह' में अंतर पूछा जाता है, या इनके उदाहरण देने को कहा जाता है। भरमौर जनजातीय क्षेत्र के केस स्टडी को ध्यान से पढ़ना, वो इस कॉन्सेप्ट को समझने में बहुत मदद करेगा।

• यह कार्यक्रम और इसके उद्देश्य बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 5 अंकों के प्रश्नों में पूछे जाते हैं, खासकर इसके उद्देश्यों और इसके तहत होने वाले कार्यों पर ध्यान दें।

• यह कार्यक्रम और इसके मुख्य सुझाव, खासकर 'पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति' द्वारा दिए गए बिंदु, बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्हें अच्छे से याद करना!

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसकी परिभाषा, मुख्य बिंदु (आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय) और उदाहरण अच्छे से तैयार कर लेना।

• यह केस स्टडी बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। नहर के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को, खासकर पर्यावरणीय प्रभावों को, विस्तार से लिखना सीखिए।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में 150 शब्दों वाले उत्तर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें दिए गए सभी सात उपाय याद रखना और उन्हें समझाना ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› नियोजन = लक्ष्य निर्धारण + सोच-विचार + कार्य योजना + क्रियान्वयन।
› नियोजन के उपागम: खंडीय (सेक्टर विकास) और प्रादेशिक (क्षेत्रीय असमानता कम करना)।
› योजना आयोग (1950) से नीति आयोग (2015) तक: योजना निर्माण से सलाहकार थिंक टैंक तक।
› पिछड़े क्षेत्रों/समूहों के लिए विशेष योजनाएँ: लक्ष्य क्षेत्र (भौगोलिक) और लक्ष्य समूह (जनसंख्या)।
› सूखा संभावी क्षेत्र विकास: चौथी योजना, रोज़गार, उत्पादन साधन, पारिस्थितिकीय संतुलन
› पर्वतीय क्षेत्र विकास: 5वीं योजना, 600मी. ऊँचाई, सभी को लाभ, स्थानीय संसाधन, पर्यावरण संतुलन।
› आज की ज़रूरतें पूरी कर, भविष्य के लिए संसाधन बचाना + सबका कल्याण।
› इंदिरा गांधी नहर: शुष्क क्षेत्र विकास, कृषि में वृद्धि, जलभराव/लवणता चुनौतियाँ।
› जल प्रबंधन, फसल चयन, भूमि सुधार, वनीकरण, वित्तीय सहायता, आर्थिक विविधीकरण सतत पोषणीय विकास हेतु।